|| एकल ||

भारत लोक शिक्षा परिषद्

(एकल अभियान से संबंधित)

विश्व का सर्वश्रेष्ठ सामाजिक शिक्षा संगठन

जनवरी – मार्च -2025

20 वां संस्करण

राष्ट्रीय महिला विभाग

रजत जयंती वर्ष

2000-2025

वनयात्रा - प्रवास विशेषांक

BLSP रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में... **भव्य एकल श्रीराम कथा**

भारत लोक शिक्षा परिषद् अपना गौरवशाली 25 वर्ष पूर्ण कर रजत जयंती मना रहा है |

एकल श्रीराम कथा में नगर एवं ग्राम संगठन की लगभग 450 सौभाग्यशाली महिलाओं द्वारा, श्री सनातन धर्म मंदिर, वेस्ट पंजाबी बाग से कथा स्थल तक भव्य शोभायात्रा निकाली गयी | इस अवसर पर 108 गाँव के बच्चों ने भगवान श्रीराम की प्रतिमूर्ति बनकर एवं विभिन्न झांकियों द्वारा नगर भ्रमण किया और सनातन धर्म के वैभव का सन्देश दिया | कलश यात्रा में सांस्कृतिक एवं देश प्रेम से ओत-प्रोत झांकियां आकर्षण के मुख्य केंद्र बने रहे |

एकल श्रीराम कथा – झलकियाँ

आरती

कलश यात्रा झांकी

स्नेह मिलन

शिव यात्रा

सहस्र चंडी यज्ञ

कलश यात्रा झांकी

मेहंदी कार्यक्रम

एकल गीत

कार्यकर्ता बहनों के साथ सामूहिक नृत्य

वनयात्रा की रूपरेखा...

(सामान्यत: -- वनयात्रा एक दिन की होती है)

वनयात्रा शब्द रामायण से प्रेरित है। भगवान श्री राम अयोध्या जैसी सुख सुविधा संपन्न नगरी को छोड़कर वन में यात्रा करते रहे और वन में रहने वाले वनवासी बंधुओं को न केवल अपने अधिकारों वरन् कर्तव्यों के प्रति जागरुक एवं सचेत बनाते रहे।

गाँव की माटी की सुगन्ध ही भारत की संस्कृति है। इसमें वह ताकत है कि बड़े से बड़े विद्वान का ह्रदय परिवर्तन कर सकती है। भावुक मन के लोगों की तो बात ही दूसरी है। अत: एकल अभियान में आज जो भी नगर संगठन का तंत्र खड़ा है, वह सब वनयात्रा का ही परिणाम है।

वनयात्रा ही क्यों ?

एकल विद्यालय का लक्ष्य एक समृद्धशाली राष्ट्र का निर्माण करना है।

परंतु गाँवों के सम्पूर्ण विकास के बिना यह असंभव है। एक ओर जहाँ नगर साधन संपन्न होते जा रहे हैं वहीं दूर-देहात के गाँवों में आज भी आधारभूत साधनों की भारी कमी है।

यात्रा का स्वरुप -

1. नगरीय परिवार एक समूह में एकल विद्यालय दर्शन करने जाता है।

2. किंतु रात्रि विश्राम वहीं किसी सरकारी गेस्ट हाउस में यदि हो और रात्रि में ग्रामवासियों के साथ नृत्य का आनंद हो तो वन यात्रा बहुत प्रभावी होती है।

वनयात्रा के प्रकार -

1. छोटी वन यात्रा अर्थात् 4-5 सदस्यों का एक समूह।
2. मँझली वन यात्रा अर्थात् 10-15 सदस्यों का समूह।
3. बड़ी वनयात्रा 25 से अधिक सदस्यों का समूह।
4. युवाओं या बच्चों की अलग से भी वन यात्रा आयोजित की जाती है।

वनयात्रा में कार्यक्रम-

1. विद्यालय दर्शन
2. परिवार सम्पर्क
3. ग्रामवासियों की बैठक
4. ग्रामवासियों के साथ सामूहिक नृत्य
5. ग्रामोत्थान प्रकल्प दर्शन
6. सत्संग में सहभागिता
7. ग्रामीणों के साथ सामूहिक खेल
8. प्राकृतिक स्थलों का दर्शन
9. आचार्य परिवार सम्मान
10. सेवाव्रती परिवार सम्मान
11. बच्चों की खेल प्रतियोगिता
12. बच्चों की हस्त शिल्प प्रतियोगिता

व्यवस्था हेतु कमेटी की आवश्यकता -

1. एक आयोजन समिति का गठन करें।
2. वाहन की व्यवस्था यात्रियों के द्वारा की जाती है।
3. कार्यक्रमों की व्यवस्था ग्राम समिति के द्वारा की जाती है।
4. मार्ग सुरक्षा के लिए सेवाव्रती उपस्थित रहते हैं।
5. एक सेवाव्रती मार्ग दर्शक के रूप में वाहन में रहते हैं, जो यात्रियों को गीत आदि के द्वारा एकल का परिचय भी देते हैं।

वनयात्रा कैसे व्यवस्थित की जाए -

1. कमेटी स्थान, समय तथा तिथि निश्चित करे।
2. जहाँ की वनयात्रा निश्चित है उस अंचल, संच अथवा ग्राम संगठन से बात करे।
3. वनयात्रियो के लिए ब्रोशर द्वारा विद्यालय संक्षिप्त विवरण दें।
4. यात्रा का Minute to Minute तैयार करें।
5. यदि कोई भी उपहार जैसे चॉकलेट या कोई अन्य वस्तु देना चाहते हैं तो पहले सुनिश्चित करें।
6. वनयात्रा के समय सावधानियों की सूची बनायें।

वनयात्रा से अपेक्षा-

1. चैप्टर के सभी पदाधिकारी अधिक से अधिक लोगों को वनयात्रा के लिए प्रेरित करें।
2. वनयात्रा में युवा वर्ग को जोड़ने का भरसक प्रयास करें।
3. वनयात्रा में अधिक भागीदारी नये वनयात्रियों की होनी आवश्यक है जिससे एकल अभियान को जन आंदोलन में बदला जा सके।
4. यात्रा के अंत में अनुभव कथन कार्यक्रम में सभी वनयात्री अपने-अपने अनुभव कहते हैं।
5. प्रत्येक वनयात्री को तन-मन-धन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

वनयात्रा के प्रभाव

वनवास यात्रा ने ही -- श्री राम जी को प्रभु श्रीराम भगवान बनाया।

धर्म और जाति के भेद किये बिना वन में प्रभु श्रीराम ने सभी को गले लगाया इसीलिए रामायण के सभी प्रसंगों में उनके वनवास का वर्णन सबसे अधिक किया जाता है। इसी से प्रेरणा लेते हुए गाँव और नगर को जोड़ने हेतु आयोजित यात्रा का नाम है..... वनयात्रा।

वनयात्रा अनुभव कथन -

“ मैंने एकल विद्यालय की कई वनयात्राएँ की हैं, परन्तु हर बार का अनुभव अलग और नया रहता है । एकल विद्यालय के बच्चों और ग्रामीण परिवारों से मिलकर जो आत्मीय स्नेह मिलता है उसे शब्दों में बया नही किया जा सकता है ।”

- श्रीमती दर्शना गोयल (राष्ट्रीय चेयरपर्सन, राष्ट्रीय महिला विभाग)

“मैं कई वर्षों से एकल से जुडी हुई हूँ, लेकिन जितनी बार मैं एकल वनयात्रा पर जाती हूँ मुझे हमेशा नया अनुभव होता है । प्रभु श्री राम लला के दर्शन और एकल विद्यालय की यह वनयात्रा मेरे लिए हमेशा अविस्मरणीय रहेगी ।”

- श्रीमती सोनल रासीवासिया (राष्ट्रीय प्रधान, राष्ट्रीय महिला विभाग)

“ग्रामीण परिवारों द्वारा जितनी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया वह अविस्मरणीय था । एकल विद्यालयों के माध्यम से बच्चों को जो संस्कार दिए जा रहे हैं वह हमें शहरों में भी देखने को नही मिलते हैं ।”

- श्रीमती प्रवेश लता अग्रवाल (राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय महिला विभाग)

“बच्चों की कलाकृतियां और खेल-खेल में बच्चों को पढ़ाने की विधि को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, एकल के बच्चों की प्रतिभा और आचार्यों की लगन देखकर मन बहुत प्रसन्न हुआ ।”

- श्रीमती साधना गुप्ता (प्रधान, महिला विभाग, उत्तरी दिल्ली चैप्टर, BLSP)

“बच्चों और ग्रामीण परिवारों से मिलकर ऐसा लगा जैसे कि हम अपने ही परिवार से मिल रहे हों। बच्चों द्वारा बनाये गये मिट्टी के सुन्दर खिलौने, ग्रामीण परिवारों द्वारा आतिथ्य सत्कार, यह सब देखकर बहुत अच्छा लगा ।”

- श्रीमती अनु गुप्ता (प्रधान, महिला विभाग, पश्चिमी दिल्ली चैप्टर, BLSP)

वनयात्रा में मैंने देखा कि एकल के इन छोटे-छोटे प्रयासों से समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा है, इन परिवर्तनों को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला जोकि बहुत ही सुखद रहा ।”

- श्रीमती नीरू बंसल (कार्यकारी प्रधान, महिला विभाग, पूर्वी दिल्ली चैप्टर, BLSP)

जिन गांवों में अच्छी सड़कें भी नही हैं आज वहां पर एकल विद्यालय का संचालन देखकर बहुत आश्चर्य हो रहा है, बच्चों ने वंदेमातरम् गाकर सुनाया और जो योग करके दिखाया वह बहुत अच्छा लगा ।

- श्रीमती सवीना वासुदेव जी (चेयरपर्सन, CSR महिला कमेटी)

यात्रा - मेवात (नूह) (25.4.2025)

पहलगांव की 22 अप्रैल को हृदयविकारक घटना से, पहले ही मन बहुत द्रवित था, तो सोचा क्यों न कम से कम तावडू, मेवात ही चले जाएं......

सुबह 10.00 बजे - परिवार मिलन :

(खरखड़ी गांव में -

लगभग 60 हिन्दू घर 170 घर अन्य...)

(मंदिर निर्माण हेतु)

आचार्य के घर उनके पति द्वारा पिछली बार मंदिर के निर्माण की योजना पर चर्चा रही थी। इस बार गाँव के 11 लोगों की शिव मंदिर हेतु कमेटी बनाकर उनके द्वारा 70 गज जमीन दी गई व कागजी कार्यवाही की।

समिति मिलन - तावडू की चेयरपर्सन (मेयर) श्रीमती मनीता जी के निवास पर संपर्क किया व तावडू की अध्यक्ष, उपाध्यक्ष बहन संतोष जी व पूनम जी से पूर्ण सहयोग मिला।

आचार्य मासिक अभ्यास वर्ग-(2 संच, 45 आचार्य उपस्थिति)

वहां समिति की बहनों व भाईयों के साथ मंदिर के स्वामी जी भी उपस्थित थे। एकल चर्चा के साथ -- ज्वलंत राष्ट्र चर्चा प्रभावी हो गयी- कि स्वामी जी ने अपनी भागवत कथा में राष्ट्र चर्चा उद्बोधन के लिए 15 मिनट आकर समय देने के लिए निमंत्रित किया।

कार्यकर्ता परिवार संपर्क- अन्य संच की आचार्य के घर परिवार जनों द्वारा बहुत प्यार से बनाया भोजन का स्वाद ग्रहण किया। उस भोजन का स्वाद ही कुछ अलग था। परिवार में बहुत स्नेह मिला।

विद्यालय दर्शन - विद्यालय में समिति बच्चों से मिलकर संस्कार पक्ष व विद्यालय दर्शन का अच्छा अनुभव रहा। नियमित 32 बच्चों के साथ अन्य मिलाकर लगभग 50 बच्चे थे।

WEC – ग्रामोत्थान प्रकल्प तावडू - मोहन पुर (पहले मोहम्मदपुर) यहाँ दो नए सिलाई सेंटर खुलने जा रहे हैं| मोहनपुर में खुलने वाले नये WEC सेंटर पर गये और ट्रेनर एवं समिति से चर्चा की।

अदुल्का संच में एक अन्य नए WEC सेंटर पर भी चर्चा रही।

कुछ मन की तसल्ली के साथ घर लौटे....

प्रवास

(सामान्यत – प्रवास तीन दिन से अधिक होता है)

संघ के जन्मदाता पूजनीय डाक्टर जी ने प्रवास के लिए अपने खून को पानी बना दिया। और वही उदाहरण पूजनीय गुरु जी का भी रहा। छोटी आयु में ही दोनों महापुरुष समाज को सन्देश देकर चले गए।

किसी भी संगठन की मजबूती की निशानी होती है कि प्रमुख अधिकारी कितना प्रवास करते हैं। प्रवास में समाज के संगठन हेतु नगर समिति, सेवाव्रती कार्यकर्ता और ग्राम समिति से संपर्क एवं रात्रि निवास किया जाता है।

1. प्रवास के प्रकार-

1. कार्यक्रम - कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रवास।
2. कार्य प्रवास - कार्य में आने वाली असुविधाओं के समाधान के लिए प्रवास।
3. कार्यकर्ता प्रवास - कार्यकर्ताओं में उत्साह हेतु प्रवास।

2. प्रवास के उद्देश्य-

1. एकल के परिवार के साथ आत्मीय सम्बंध स्थापित करना।
2. केंद्रीय निर्णय से परिचित कराना।
3. कार्यकर्ताओं में उत्साह का भाव जागृत करना।
4. स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु योग्य मार्गदर्शन देना।

3. उपयोग-

1. प्रवास में यदि कार्यकर्ताओं के परिवारों में ठहरने की व्यवस्था हो सके और उनके परिवार के साथ आत्मीय सम्बंध बन सके तो संगठन को बहुत लाभ होता है।
2. कार्यक्रम में भाषण के लिए प्रवास, जिसका संगठन को कुछ लाभ होता है।
3. प्रवास में बैठक संगठन के कर्म काण्ड के समान है।

4. प्रवास के समय निवास -

1. स्थानीय समिति सदस्य के परिवार में सब से उत्तम।
2. कार्यालय में कार्यकर्ताओं के साथ अनौपचारिक सम्पर्क के लिए उत्तम।

5. प्रवास में बैठक उपवास -

1. सेवाव्रतियों को वर्ष में कम से कम 2 मास बैठक उपवास करना चाहिए।
2. अर्थात् प्रवास पूरा करेंगे किंतु बैठक बिल्कुल नहीं लेंगे।
3. केवल सेवाव्रतियों के परिवारों में ही सम्पर्क करेंगे।

6. प्रवास से अपेक्षा -

1. प्रवास में अधिकारी भाव के स्थान पर पारिवारिक भाव का संदेश जाना चाहिए।
2. संगठन होता है दोस्ती और मस्ती से।
3. स्वयं सब काम करने की तुलना में किसी से वह काम कराना अधिक मानसिक परिश्रम माँगता।

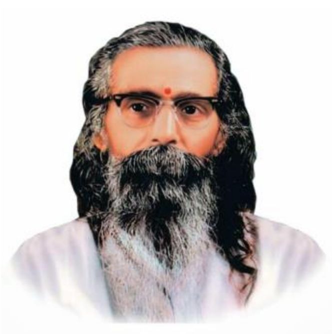

श्री गुरुजी
माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

"यह भारत एक अखंड विराट् राष्ट्रपुरुष का शरीर है। उसके हम छोटे-छोटे अवयव हैं। अवयवों के समान हम परस्पर प्रेमभाव धारण कर राष्ट्र-शरीर एकसंघा रखेंगे।"

चूल्हे तक संपर्क

गुरुजी के जीवन का प्रसंग है कि वे प्रवास के दौरान सभी परिवारों में मां की रसोई तक जरूर जाते थे और कहते थे कि मां जल्दी भोजन दे दो। यदि देर महसूस होती कि भोजन तैयार नहीं है तो रोटी को ही लपेटकर खा लेते थे और कहते थे, समय थोड़ा है... मुझे तो जल्दी प्रवास पर जाना है। मां कहती कि तुम्हारा यह प्रवास न जाने क्या है...मुझे तो समझ नहीं आता, वे हंस कर कहते थे कि राष्ट्र को एक करने के लिए, संगठन खड़ा करने के लिए जा रहा हूं। यही था उनका प्रवास करते-करते परिवारों को एक करने के लिए, चूल्हे तक का संपर्क........

आदरणीय गुरुजी माधव सदाशिव गोलवलकर जी का जीवन राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित रहा

एक भावुक मां की शिक्षा....

हमारे भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने एक भावुक विचार रखा कि...."आप जानते हैं मैं एक गांव से आती हूं। शुरू से ही मैं हरियाली से परिचित हूं। मैं जब छोटी थी, तब मेरे पिताजी के पास इतने साधन नहीं थे तो हम सूखी लकड़ी से खाना बनाते थे। पिताजी लकड़ी चुनकर लाते थे, फिर उसे काट कर जलाने लायक बनाते थे। मैं देखती थी और मेरे मन में प्रश्न उठता था कि पिता जी क्यों लकड़ी को चोट देने से पहले नमन करते हैं। वे बोले यह अभी बूढ़ी हो गई है, सूख गई है, पर जिंदगी भर इसने फूल, हवा, पानी दिए हैं। आज भी यह सूखी लकड़ी हमें काम पर सहयोग दे रही है। इसलिए उससे क्षमा याचना करते हैं और नमन करते हैं...कि इसके अलावा हमारे पास और कोई दूसरा उपाय नहीं है....मां की शिक्षा, मां का प्यार, मां का आंचल, मां की गोद, मां का अपनापन, मां की डांट फटकार...समाज निर्माण में एक अहम भूमिका रखते हैं।

यह तो सर्वविदित है कि परिवार चलता है माँ से, उसी प्रकार एकल परिवार भी चल रहा है माँ से, चूँकि नगर संगठन बड़ा भाई है अतः नगर संगठन की माताओं की भूमिका बड़ी माँ के रूप में रहती है।

1. एकल में माँ की रचना-

1. नगर से संभाग के लिए निकट के चैप्टर से दो सक्रिय माताएँ... संभाग की माँ के रूप में चयनित की जाती हैं।
2. दो माताओं के चयन के पीछे उद्देश्य रहता है कि वे परस्पर परामर्श से किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकेंगी।

2. माँ का दायित्व-

1. प्रत्येक माँ कम से कम 5 सेवाव्रतियों के परिवारों के साथ सम्पर्क करती हैं।
2. अभियान में वरिष्ठ सेवाव्रती लगभग 200 हैं। अतः उनके परिवार के लिए कोई न कोई माँ चयनित होती हैं।
3. मुख्य रूप से उन परिवारों के बच्चों की उच्च शिक्षा अब अभियान का दायित्व बन गया है। अतः संभाग की माँ से उसके लिए योग्य व्यवस्था करने की अपेक्षा रहती है।
4. सप्ताह में कम से कम एक बार सीधी वार्ता करना, मुख्य दायित्व संभाग के माँ का रहता है।

3. सीधी वार्ता ग्राम स्तर पर -

बैठक में लक्ष्य की समीक्षा तथा आगामी लक्ष्य की तैयारी की चर्चा होती है। कार्य में आने वाली कठिनाइयों का समाधान किया जाता है।

4. माँ से अपेक्षा-

1. वरिष्ठ सेवाव्रतियों के परिवारों को यह लगना चाहिए कि हमारी चिंता करने की भी कोई व्यवस्था है।
2. अब उन परिवारों के बच्चे बड़े हो गए, अतः उनकी योग्य शिक्षा हेतु अभियान की ओर से कोई न कोई परिवार दायित्व लेने को तैयार है।
3. उन परिवारों को सहायता कार्यकर्ता विभाग के माध्यम से होनी चाहिए।
4. संक्रांति संग्रह द्वारा आचार्य तथा सेवाव्रती के परिवारों को उपहार दिए जाते हैं।

राष्ट्रीय महिला विभाग विवरण (2024-25)

S.No	चैप्टर	बैठकों	वनयात्रा	नए सदस्य	क्राउड फंडिंग	विद्यालय संग्रह	अन्य गतिविधियाँ
	राष्ट्रीय महिला विभाग	10	1	83	-	कुल 494 (विद्यालय +क्राउड फंडिंग)	1.श्री कृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम। 2. समन्वय मीटिंग - 200 लगभग 3. प्रवास 4. संसद भवन विजिट 5. एकल श्रीराम कथा कलश यात्रा 6. मेहंदी कार्यक्रम
1	पूर्वी दिल्ली	6	1	14	a). 35000 b).11,18,100 (जन्माष्टमी फंड) c). 2,98,100 (संक्रांति राशि)	41	1. ब्रेकफास्ट मीटिंग-1 2. ब्रेकफास्ट मीटिंग-2 3. अक्षरधाम यात्रा
2	पश्चिमी दिल्ली	9	1	-	2,20,000	51	1. हरियाली तीज 2. एकल श्रीराम कथा 3. वनयात्रा
3	उत्तरी दिल्ली	12	2	17	1,02,500	237	1. हनुमान जन्मोत्सव 2. मातृत्व 3. योग दिवस 4. हरियाली तीज 5. स्वतंत्रता दिवस 6. राधा अष्टमी 7. दीपावली उत्सव 8. बाल दिवस 9. मकर संक्रांति 10. होली स्पेशल
4	दक्षिणी दिल्ली	2	1	-	1,00,000	21	1. एकल श्रीराम कथा कलश यात्रा (45 सदस्य) 2. गुरुग्राम में कॉर्नर मीटिंग
5	कानपुर	40	5	50	-	48	1. आचार्य अभ्यास वर्ग 2. एकल विद्यालय कैलेंडर 3. जागरूकता अभियान 4. भजन संध्या 6. मेन्स्ट्रुअल हाइजीन वर्कशॉप 7. एकल लाइब्रेरी (264 गांवों में) 8. ई-रिक्शा कंप्यूटर वैन 9. मकर संक्रांति उपहार वितरण 10. आचार्य सम्मान समारोह 11.वृक्षारोपण कार्यक्रम (16 संच)
6	लखनऊ	13	2	0	-	25	1. श्री राम शोभा यात्रा 2. होली मिलन 3. अमेलिया प्रदर्शनी
7	जम्मू	-	6	-	-	-	1. ग्राम स्तर पर संपर्क
8	वाराणसी	2	2	-	-	-	1. स्वतंत्रता दिवस 2. वृक्षारोपण 3. वार्षिक कार्यक्रम में भाग
9	सोनीपत	1	-	2	-	-	1. चैप्टर ओपनिंग
10	रुद्रपुर	1	-	-	-	-	1. नयी महिला समिति का गठन 2. चैप्टर कार्यक्रमों में भाग
11	फरीदाबाद	2	-	-	-	5	1. सक्रिय सहभागिता
12	सीएसआर	2	2	-	-	10	1. सक्रिय टीम

भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं आक्रोश प्रदर्शन

भारत के दो लाख गांवों तक पहलगांव में हिंदू भारतीयों की पाकिस्तान परस्त आतंकियों द्वारा नृशंस हत्या किए जाने के विरोध में एकल द्वारा आक्रोश प्रदर्शन एवं दिवंगत आत्माओं की शांति के किए प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

25 अप्रैल 2025 को देशभर में पहलगाम में हिंदू भारतीयों की नृशंस हत्या के विरोध में श्रद्धांजलि सभा व आक्रोश प्रदर्शन किया गया। गाँवों, नगरों एवं एकल विद्यालयों में मशालें, मोमबत्ती रैलियां निकालकर विरोध प्रदर्शन किया गया और मारे गए लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए पुष्पांजलि अर्पित कर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थनाएं की गईं। छात्रों व युवाओं ने आतंकवाद के खिलाफ नारे लगाए और कड़ा विरोध दर्ज कराया। महिलाओं व नवयुवकों ने पाकिस्तान-बांग्लादेशी उत्पादों के बहिष्कार और भारत के गौरव की रक्षा के लिए तत्पर रहने का संकल्प भी लिया ।

अब यह आक्रोश रैलियों तक ही सीमित नही रह जायेगा..........

एकल युवा BLSP

संपादक की कलम से......

रजत जयती के कार्यक्रम पर हम
सभी बहुत खुश हुए....
फिर -- 22-अप्रैल 2025 का दिन....
नि:शब्द हो गए.....
फिर -- सोचा कि
अब समय नि:शब्द होने का नहीं
शब्द खोजने का है....
कुछ करके दिखाने का है...
आईये मिलकर समाज में
शिक्षा का दीप जलाएं....
इस अंधियारे को मिलकर दूर करें....

सामाजिक विकास के दो पहिये हैं जिसमें से एक पहिया महिलाएं हैं जिसके बिना विकास की रफ़्तार को पकड़ा नही जा सकता है, इसलिए एकल अभियान द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। एकल तीन विषयों पर प्रमुखता से कार्य करता है- पहला शिक्षा, जिससे जीवन संस्कारित और प्रगतिशील हो। दूसरा आत्मनिर्भरता जिसमें कौशल प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा प्रदान किया जाता है और तीसरा सामाजिक जागरूकता, जिसमें उन्हें सामाजिक मुद्दो और अपने अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाता है |

माधुरी अग्रवाल
राष्ट्रीय उपप्रधान, राष्ट्रीय महिला विभाग

एकल विद्यालय के लिए सहयोग

आईये अपने सपनों का भारत बनायें और स्वावलंबी, स्वाभिमानी भारत के नागरिक होने का गौरव प्राप्त करें।

एक एकल विद्यालय	₹ 30,000/- वार्षिक
50 एकल विद्यालय (परमवीर)	₹ 15,00,000/- वार्षिक
100 एकल विद्यालय (शतकवीर)	₹ 30,00,000/- वार्षिक
1000 एकल विद्यालय (महाशतकवीर)	₹ 30,000,000/- वार्षिक

भारत लोक शिक्षा परिषद् भारत सरकार के कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय (IICA) के अंतर्गत CSR दान के लिए सूचीबद्ध है |

DONATE NOW

एकल विद्यालय में सीधे दान हेतु सम्पर्क करें-

Only For 80G:

Bharat Lok Shiksha Parishad
A/C No: 467902050000186
Union Bank of India
Shalimar Bagh, Delhi
IFSC Code: UBIN0546798

Only for CSR:

Bharat Lok Shiksha Parishad
A/C NO. 467902010123677
Union Bank Of India
Shalimar Bagh, Delhi
IFSC code: UBIN0546798

For More Info.

प्रकाशक : भारत लोक शिक्षा परिषद्

मुख्य संपादक – श्रीमती माधुरी अग्रवाल (राष्ट्रीय उपप्रधान, राष्ट्रीय महिला विभाग)
सेन्ट्रल ऑफिस : NS-15, FD Block, पीतमपुरा, दिल्ली- 110034
संपर्क सूत्र : 011 4752 3879, 9999399063, 8448386443
ई मेल : administration@blspindia.org, वेबसाइट : www.ekalblspindia.org